International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 218-224

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 218-224
www.allresearchjournal.com
Received: 17-05-2017
Accepted: 19-06-2017

डॉ. शोभा कुमारी
गृह विज्ञान विभाग,
जवाहरलाल मेमोरियल कॉलेज, सुरसन्ड बिहार विश्वविद्यालय, मूजफ्फरपुर, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ. शोभा कुमारी
गृह विज्ञान विभाग,
जवाहरलाल मेमोरियल कॉलेज, सुरसन्ड बिहार विश्वविद्यालय, मूजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सरकारी विद्यालयों के बच्चों के शैक्षणिक विकास में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव (धनवाद-शहर के विशेष संदर्भ में)

डॉ. शोभा कुमारी

परिचय

बच्चों के शैक्षणिक विकास में सामाजिक:– आर्थिक वातावरण का बहुत बड़ा योगदान होता है। आज हमारा देश काफी उन्नति कर चुका है परन्तु आज भी यहाँ के समाज में बच्चों को सामाजिक – आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। एक योग्य शिक्षक शैक्षणिक विकास के कारणों को बालक के वातावरण में ढूंढते है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि शैक्षणिक विकास में अनुवांशिकता का प्रभाव कस तरह से कम होता है। सामान्य रूप से बालक अनुवांशिकता से ही बुद्धि का एक विशेष स्तर तथा विभिन्न मानसिक योग्यताएँ लेकर उत्पन्न होता है। इनमें अच्छा वातावरण देकर केवल एक सीमा तक ही उन्नति की जा सकती है। परन्तु शिक्षा का प्रयोजन वातावरण में सुधार कर के बालक के शैक्षणिक विकास को प्रोत्साहित करना है।

गर्भावस्था से ही बच्चों का मानसिक तथा शारिरीक विकास आरंभ हो जाता है। इस अवस्था में गर्भवती को उचित पोषण देकर बच्चे के मानसिक स्तर को उन्नत किया जा सकता है। मानसिक विकास की गति में भी व्यक्तिगत विभिन्नताएँ पायी जाती है। साथ में इसके आस-पास के वातावरण के कारण भी उसके शैक्षणिक विकास में विभिन्नताएँ पायी जाती है। स्वस्थ पोषण एवं स्वस्थ वातावरण से ही बच्चों का विकास अच्छा हो सकता है। इस संदर्भ में अरस्तु का कथन है कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है"। पी.डी.पाठक के अनुसार उच्च सामाजिक स्थिति वाले परिवार के बच्चे की बुद्धि की मौखिक और लिखित परीक्षाओं में निम्न सामाजिक स्थिति वाले परिवार के बच्चे की बुद्धि की मौखिक और लिखित परीक्षाओं में निम्न विकास को बहुत हद तक प्रभावित करती है। अगर बच्चो के सही पोषण और सामाजिक आर्थिक पहलुओं पर ध्यान दिया जाए तो उनके विकास को सही दिशा मिलेगी। अतः कहा जा सकता है कि बच्चों के शैक्षणिक विकास की समस्या विकास का महत्वपूर्ण पहलु है जो सीधे-सीधे देश व समाज के विकास से संबंधित है। मनोवैज्ञानिक द्वारा पूर्व में भी बालकों के शैक्षणिक विकास के क्रम में सामाजिक – आर्थिक प्रभावों का अध्ययन किया गया है एवं अन्तर भी देखा गया है। वर्त्तमान में अच्छे सामाजिक – आर्थिक स्तर के परिवारों में बच्चों के शैक्षणिक विकास में समस्याएँ देखी जा रही है। अतः विकास से संबंधित इस महत्वपूर्ण पहलू को और अधिक सहनता से अध्ययन करने की आवश्यकता है।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

सम्पूर्ण जनसंख्या को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है – उच्च वर्ग, माध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग। उच्च वर्ग के अन्तर्गत समपन्न जमीनदार सेठ – साहूकार बिन कमाये बड़ी संपत्ति और धन के मालिक इत्यादि आते हैं। माध्यम वर्ग में नौकरी पेशा या व्यवसायी आते हैं जिनकी आमदनी से किसी प्रकार खर्च चलता है। निम्न वर्ग में ऐसे लोग आते हैं जो कठिन शारीरिक श्रम द्वारा अप्रर्याप्त जीविका प्राप्त करते हैं। प्रत्येक वर्ग में ऊँचे-निचे लोग हो सकते हैं। अभिभावक के सामाजिक – आर्थिक स्तर का व्यापक प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ता है। ड्कर एवं रेमर्स (1952) ने उच्च विद्यालय के 1000 विद्यार्थियों व्यक्तित्व स अन्बन्धी समस्याओं को निर्धारित किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि नीम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा 50 प्रतिशत व्यवहार समस्याएँ अधिक थी। सिम्स (1954) ने उच्च विद्यालय और महाविद्यालय के विद्यार्थियों से पूछा कि वे मध्यवर्ग के हैं या श्रमिकवर्ग के। विद्यार्थियों द्वारा दी गई रिपोर्ट के आधार पर ही उनका वर्गीकरण किया, फिर उनकी सामजस्य समस्याओं की जाँच की। देखा गया कि श्रमिक – वर्ग के विद्यार्थियों में सामजस्य समस्या अधिक थी। स्प्रिंगर (1938) के अनुसार प्रत्येक सामाजिक – आर्थिक वर्ग में बाल-पोषण पद्धति एक विशेष ढंग की होती है। निम्नवर्ग में प्रधानतः स्तन्यदान द्वारा बाल – पोषण होता है, जबकि ऊँचे वर्ग में बोतल से दूध पिलाकर बच्चे का पोषण किया जाता है। निम्न वर्ग में ऊँचे वर्ग की अपेक्षा शौच प्रशिक्षण सहज और आसान होता है निम्न वर्गीय माताएँ अपने बच्चों के साथ उतना समय नहीं देती है जितना ऊँचे वर्ग की माताएँ देती है। ये सभी भेद व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। सियर्स मैककोबी एवं लेबिन (1957) के अध्ययन से पता चलता है कि श्रमिकवर्ग की माएँ अपने बच्चों को अधिक प्रतिबन्धों में जकड़ती है और उच्चवर्गीय माएँ अधिक अनुज्ञापक (Permissive) होती है। रिजेन(1956) ने देखा कि मध्य और उच्चवर्ग के बच्चों की आवश्यकाता निम्नवर्गीय बच्चों से ऊँची होती है, इसलिए वे समाज में अपना स्थान क्रमशःउंचा करते जाते हैं।

निम्नवर्गीय बच्चों की जैविक निराशाएँ अनेक प्रकार की होती है। उन्हें भोजन कम मिलता है, वस्त्र तथा आवासीय सुविधाओं का आभाव रहता है और ये सभी बातें पिता के निम्न व्यवसाय तथा अल्प आय के कारण होती है। निम्न – वर्गीय बच्चों को जैविक निराशाओं के अतिरिक्त सामजिक निराशाएँ भी होती है। स्कूल के सारे खेल – कूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर मध्य एवं उच्च वर्गीय विद्यार्थियों का अधिकार रहता है और नेतृत्व भी उन्हीं को मिलता है। निम्नवर्गीय विद्यार्थी विवश दर्शक बने रहते है। इतना ही नहीं, इनके साधारण कपड़े, खराब मकान आदि की खिल्ली भी उड़ाई जाती है। इन सभी जैविक एवं सामाजिक निराशाओं का प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ता है।

आर्थिक अभाव के कारण निम्नवर्गीय परिवारों में प्रायः एक तनावपूर्ण स्थिति रहती है। परिवार की मूल आवश्यकताओं की भी पूर्ति में असमर्थ पिता अपने मानसिक तनाव का बुखार बच्चों पर उतारता है। कठिनाईग्रस्त पिता बच्चों के साधारण दोष के लिए भी कठोर दण्ड देता है। जिससे पारिवारिक असामजस्य बढ़ता है और बच्चों का व्यक्तित्व कुंठित होने लगता है। हेवार्ड (1935) ने उच्च, मध्य एवं निम्नवर्गीय का पारिवारिक असामजस्य अंक निर्धारित किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जैसे – जैसे परिवार का आर्थिक स्तर गिरता जाता है वहाँ आन्तरिक असामजस्य बढ़ता है तथा व्यक्ति पर उसके कुप्रभाव बढ़ते जाते हैं। ऐसे असामजस्य के कारण बहुत से परिवार टूट जाते है। टूटे हुए परिवारों में बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य इतना घट जाता है कि अधिकांश अपराधी बच्चे ऐसे ही परिवारों के होते हैं।

आर्थिक स्तर का प्रभाव व्यक्ति की अभिवृतियों पर भी पड़ता है। जो व्यक्तित्व के अभिन्न अंग होते हैं। जब व्यक्ति अपनी निराशाओं से उत्पन्न आक्रमणशीलता को समाज के किसी भी ऐसे कमजोर वर्ग पर स्थानान्तरित कर देता है जो प्रतिरोध में सक्षम नहीं रहता हैं। फ्रायड का विचार है कि आक्रमणशीलता की यह भावना मूलरूप से अपने माता-पिता के प्रति रहती है जो स्थानान्तरित होकर कमजोर वर्ग पर चली जाती है। यह आक्रमणशीलता एक प्रकार की अभिवृति है जो आधुनिक विश्वास के अनुसार मूलतः आर्थिक नैराश्य से उत्पन्न होती है। जब भी देश के मुख्य वर्गवालों को आर्थिक निराशा होती है तो वे अपने निकट के कमजोर वर्ग, जैसे भारत में हरिजन, मुसलमान आदि और अमेरिका में यहूदी, हब्सी आदि पर आक्रमण करने लगते हैं। वर्ड और मोनेकेसी, (1954) ने देखा कि जब गौरांगों के आवासीय क्षेत्र में हब्सी भी प्रवेश करने लगे और गौरांगों की आर्थिक स्थिति खराब होने लगी तो वे हब्सियों के प्रति अधिक प्रतिकूल होते गये। निम्नवर्गीय विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता अपेक्षाकृत कम होती है। जेसेल और लाडे (1927) के अनुसार शिशु पाठशाला में भी यह दोष देखे जा जाते हैं। लावाब (1970) ने देखा कि निम्न और मध्यवर्ग के बच्चों की भाषा भी निम्न होती है। अमेरिका के अल्पसंख्यकों की घनी आबादी वाली गंदी बस्तियों में पालने वाले बच्चों की अंग्रेजी भाषा मध्यवर्ग की साफ-सुथरी आबादी में पलने वालों से भिन्न होती है। निम्नवर्गीय बच्चों की भाषा अधिक प्रत्यक्ष और भावसूचक

होती है और यदि विद्यालय में मध्य वर्गीय शिक्षक हुए तो इन बच्चों को कठिनाई होती है।

गफ (1946) ने अपने अध्ययन से देखा कि निरन्तर आशंका एवं असुरक्षा के कारण निम्न वर्गीय व्यक्तियों में संतुलन एवं आत्म विश्वास का अभाव रहता है और लैंगिकता के प्रति उनके विचार रुढ़िवादी होते हैं। गफ ने यह भी देखा है कि श्रमिक वर्ग के लोगों में शारीरिक व्याधियाँ अधिक होती है, ये अधिक विद्रोही होते है तथा उनमें संवेगात्मक अशांति अधिक होती है। स्टीट (1945) के अनुसार कृषक बच्चे छोटे शह के अकृषक बच्चों से अच्छा आत्मसमंजन प्रदर्शित करते हैं और कृषकों में भी निम्न आर्थिक स्तर के बच्चों में आत्म-समंजन तथा सामाजिक संगठन की कठिनाइयाँ रहती है। अध्ययन से यह भी सिद्ध हुआ है कि गरीबों में चिन्ता अधिक होती है, आत्म निर्भरता कम होती है, अंतर्मुक्ता अधिक और प्रभुत्वाकांक्षा कम होती है। ग्लूएक एवं ग्लूएक (1950) ने अपने अध्ययन में पाया कि गरीबों में एक सामान्य अस्पष्ट अचेतन चिन्ता और असुरक्षा की भावना रहती है। ओल्ड (1952) के अनुसार मध्यमवर्गीय बच्चे निम्न – वर्गीय बच्चों की तुलना में अधिक कल्पनाशील, बुद्धिमान और प्रौढ़ होते हैं।

व्यक्तिगत विकास पर सामाजिक –आर्थिक स्थितियाँ का प्रभाव पड़ता है। यह सत्य है कि कभी-कभी गरीबी वरदान बन जाती है और अमीरी अभिशाप, परन्तु अधिकांश परिस्थितियों में सामाजिक एवं आर्थिक सम्पन्नता समुचित एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है। हिमिलविट (1955) ने निम्न सामाजिक – आर्थिक वर्ग की मध्य सामाजिक – आर्थिक वर्ग केलोगों में अधिक संतुलन पाया। परामेश्वरन (1957) ने निम्न सामाजिक – आर्थिक स्थिति वाले व्यक्तियों में कुसमायोजन के अधिक लक्षणों का उल्लेख किया है। कैनर (1985) के अनुसार गरीब परिवार के बच्चों में आत्म-विश्वास के भाव और परिपक्वता में कमी पाई जाती है। हाफिडिज (1934) के अनुसार निम्न सामाजिक – आर्थिक स्थिति के बच्चों की अपेक्षा उच्च सामाजिक – आर्थिक स्थिति के बच्चों में आधिपत्य, आत्मनिर्भरता एवं अभिमान आदि शीलगुण अधिक पाये जाते हैं। स्टॉट (1962) के अनुसार लाभान्वित बच्चों की अपेक्षा अलाभान्वित बच्चो में व्यवहार विकृतियाँ अधिक पाई जाती है।

आइजिक एवं कूकसन (1970) ने उच्च सामाजिक – आर्थिक स्थिति के बच्चों में बहिर्मुखता अधिक और स्नायु रोग कम पाया। हॉलिगशीड रेडलिच (1988) ने उच्च वर्ग की अपेक्षा निम्न – वर्ग के व्यक्तियों में चरित्र विकृति अधिक पाईव थॉपे एव जानसन (1958) में निम्न आर्थिक स्तर के बच्चों में अपराध प्रवृति अधिक पाई। सुलेमान (1949) के अध्ययन में निम्न सामाजिक – आर्थिक स्थिति के बच्चों में ढीलाढाला अनुशासन, नीचा मनोबल, दुर्बल अहम शक्ति आदि शील गुण देखे गये। हिमशो (1984) के अध्ययन में उच्च – वर्ग की अपेक्षा निम्नवर्ग के व्यक्तियों में आक्रमणकारी प्रवृति पाई गयी। लेकिन ग्रीन (1946) के अध्ययन में निम्नवर्ग की अपेक्षा मध्यमवर्ग के बच्चों में दोष भाव तथा चिन्ता बोध अधिक पाया गया।

भारतीय परिवेश में किये गये अध्ययनों से भी व्यक्तिगत विकास पर सामाजिक – आर्थिक स्थिति का प्रभाव प्रमाणित होता है। शुक्ला और मिश्र (1980) ने निम्न सामाजिक – आर्थिक स्थिति की तुलना में उच्च सामाजिक – आर्थिक स्थिति के बच्चों में बेहतर अभियोजन पाया। दास एवं दास ने निम्न जाति की अपेक्षा उच्च जाति के बच्चों में अधिक संज्ञानात्मक योग्यता पाई। सक्सेना (1982) ने अलाभान्वित बच्चों में अमूर्त बुद्धि अधिक पाई। घोष एवं पाल (1982) ने उच्च सामाजिक – आर्थिक कॉलेज छात्रों तथा छात्राओं में सर्जनात्मक तथा अभियोजन की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक पाई हैं। सुलेमान तथा विजय (1994) ने उच्च सामाजिक – आर्थिक स्थिति तथा समायोजन के बीच धनात्मक सह संबंध पाया।

सामाजिक वर्ग भेद का प्रभाव भी व्यक्तित्व पर दो साधनों से पड़ता है – (1) वर्ग भेद से बाल पोषण पद्धति बदल जाती है और (2) वर्ग – से बच्चों का आर्थिक नैराश्य तथा आवासीय अवस्था के भेद उत्पन्न होते है और इन दोनों अंगो से व्यक्तित्व प्रभावित होता है। जिन लोगों की आर्थिक स्थिति अधिक खराब थी और जो अपने व्यवसाय से असंतुष्ट थे और वे अधिक आक्रमक हो जाते हैं।

शोध का उद्देश्य

1. बच्चों के शैक्षणिक विकास में पारिवारिक वातावरण की भूमिका को जानना।
2. बच्चों के शैक्षणिक विकास में माता-पिता के शैक्षणिक योग्यता को जानना।
3. बच्चों के शैक्षणिक विकास में शिक्षण संस्थाओं के प्रभावों को जानना।
4. बच्चों के शैक्षणिक विकास में माता-पिता के आर्थिक स्तर के प्रभाव को जानना।
5. बच्चों के शैक्षणिक विकास में माता-पिता के रोजगार के प्रभाव को जानना।
6. माता-पिता के सामाजिक सम्पर्क का बच्चों के शैक्षणिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों को जानना।

उपकल्पना

1. बच्चों के शैक्षणिक विकास पर उनके पारिवारिक वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है?
2. बच्चों के शैक्षणिक विकास में माता-पिता के शैक्षणिक योग्यता का प्रभाव पड़ता है?
3. बच्चों के शैक्षणिक विकास में शिक्षण संस्थाओं का प्रभाव पड़ता है?
4. बच्चों के शैक्षणिक विकास आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है?
5. बच्चों के शैक्षणिक विकास में माता-पिता के रोजगार का प्रभाव पड़ता है?
6. बच्चों के शैक्षणिक विकास में माता-पिता के सामाजिक सम्पर्क का प्रभाव पड़ता है?

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में तुलनात्मक एवं सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संकलन में निदर्शन, अवलोकन, साक्षात्कार और अनुसूची का प्रयोग किया गया है। निदर्शन के रूप में बोकारो शहर के 4 विद्यालयों से 100 बच्चों का चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया है। 100 निदर्शों में 50 छात्र और 50 छात्राएँ हैं जिनसे प्राप्त तथ्यों की व्याख्या निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तथ्यों के विश्लेषणों से यह स्पष्ट होता है कि बच्चों के शैक्षणिक विकास पर विद्यालय का प्रभाव पड़ता है लेकिन जिस परिवेश से वे पढ़ने आते हैं उनको महत्वपूर्ण प्रभाव बच्चों के शैक्षणिक विकास पर पड़ेगा। उस परिवेश में प्रथमतः अभिभावक की सामाजिक – आर्थिक स्थिति आता है। अतः अभिभावक के सामाजिक – आर्थिक स्थिति को जानना आवश्यक है। इसके लिए पारिवारिक वातावरण, परिवार के स्वरूप, अभिभावकों की शैक्षणिक स्थिति, परिवार की आय और व्यवसाय आदि आधारों को अम्मिलित किया गया है। इससे सम्बंधित तथ्यों की व्याख्या निम्नलिखित रुप में विभिन्न सारणियों में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या – 1

पारिवारिक वातावरण	छात्र सं. एवं प्रति.	छात्रा सं. एवं प्रति.	कुल योग सं. एवं प्रति.
सुखद एवं सौहार्दपूर्ण	08	10	18
कलहपूर्ण	16	20	30
सामान्य	26	20	46
योग	50	50	100

सारणी संख्या – 1 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले 18 प्रतिशत बच्चे सुखद एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण से विद्यालय आते हैं। 46 प्रतिशत बच्चे सामान्य वातावरण से तथा 36 प्रतिशत बच्चे कलहपूर्ण वातावरण से विद्यालय आते हैं। अतः कहा जा सकता है कि 36 प्रतिशत बच्चों का शैक्षणिक विकास बाचित है।

सारणी संख्या – 2: बच्चों के परिवार के स्वरूप के आधार पर वर्गीकरण

पारिवारिक वातावरण	छात्र परिवार सं. एवं प्रति.	छात्रा परिवार सं. एवं प्रति.	कुल योग सं. एवं प्रति.
नाभिक	34	32	66
संयुक्त	16	18	34
योग	50	50	100

सारणी संख्या – 2 से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों में 66 प्रतिशत नाभिक परिवार के और 34 प्रतिशत संयुक्त परिवार के हैं। अतः कहा अजा सकता है कि नाभिक परिवार के बच्चे और अभिभावकों का प्रतिशत संयुक्त परिवार की अपेक्षा अधिक है।

सारणी संख्या – 3: बच्चों के अभिभावकों का शैक्षणिक स्तर

शैक्षणिक स्तर	महिला सं. एवं प्रति.	पुरुष सं. एवं प्रति.	कुल योग सं. एवं प्रति.
निरक्षर	12	8	20
हाई स्कूल	16	16	32
इन्टर	8	6	14
स्नातक	14	20	34
योग	50	50	100

उपयुक्त सारणी संख्या – 3 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिन अभिभावकों के बच्चे सरकारी विद्यालयों में पढ़ रहे हैं वैसे अभिभावकों में 20 प्रतिशत निरक्षर है। जबकि 32 प्रतिशत हाई स्कूल तक, 14 प्रतिशत इन्टर स्तर तक तथा 34 प्रतिशत स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त अभिभावक है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्नातक तक शिक्षित अभिभावकों का प्रतिशत सबसे अधिक है।

सारणी संख्या – 4: बच्चों के अभिभावकों का मासिक आय के आधार पर वर्गीकरण

पारिवारिक वातावरण	छात्र के अभिभावक सं. एवं प्रति.	छात्राओं के अभिभावक सं. एवं प्रति.	कुल योग सं. एवं प्रति.
2001-3000	16	14	30
3001-4000	24	28	52
4001-5000	8	6	14
5001 से ऊपर	2	2	4
योग	50	50	100

सारणी संख्या – 4 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 30 प्रतिशत अभिभावकों की मासिक आय 2001-3000 रुपये है जबकि 3001-4000 रुपये मासिक आय वाले अभिभावकों का प्रतिशत 52 है। 14 प्रतिशत अभिभावकों की मासिक आय 4001-5000 रुपये है। 5001 रुपये से ऊपर मासिक आय वाले अभिभावकों का प्रतिशत सबसे कम अर्थात 4 प्रतिशत है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सबसे ज्यादा प्रतिशत अर्थात 52 प्रतिशत वैसे आय वाले अभिभावक है जिनकी मासिक आय 3001-4000 रुपये है।

अभिभावक के व्यवसाय का प्रभाव भी बच्चों के शैक्षणिक विकास पर पड़ता है। अतः अभिभावकों के व्यवसायिक संगठन को भी जानने का प्रयास किया गया है। इसके लिए उनके आय को जानने का प्रयास किया गया है जिसे सारणी संख्या -5 में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या – 5: बच्चों के अभिभावकों का आय के आधार पर वर्गीकरण

आय का साधन	छात्रों के अभिभावक सं. एवं प्रति.	छात्राओं के अभिभावक सं. एवं प्रति.	कुल योग सं. एवं प्रति.
नौकरी	40	36	76
व्यवसाय	8	12	20
अन्य	2	2	4
योग	50	50	100

सारणी संख्या – 5 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 76 प्रतिशत बच्चों के अभिभावकों के आय का साधन नौकरी है जबकि 20 प्रतिशत अभिभावकों के मासिक आय का साधन व्यवसाय है। 4 प्रतिशत वैसे अभिभावक है जो अन्य पेशे में हैं। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि नौकरी पेशा वाले अभिभावकों का प्रतिशत सबसे ज्यादा है।

सारणी संख्या 6: बच्चों का उम्र के आधार पर वर्गीकरण

आयु–समूह	छात्रों के सं. एवं प्रति.	छात्राओं के सं. एवं प्रति.	कुल योग सं. एवं प्रति.
6 – 7 वर्ष	12	12	24
8 – 9 वर्ष	28	24	52
10 से ऊपर	10	14	24
योग	50	50	100

सारणी संख्या – 6 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ रहे बच्चों में 24 प्रतिशत बच्चे 6 – 7 वर्ष के आयु समूह के है जबकि 52 प्रतिशत बच्चे 8 – 9 वर्ष के आयु समूह के है। 10 वर्ष से ऊपर आयु समूह में पढ़ने वाले 24 प्रतिशत बच्चे हैं। अतः कहा जा सकता है कि 8 – 9 वर्ष के आयु समूह के बच्चों का प्रतिशत सबसे अधिक है।

सारणी संख्या 7: बच्चों का वर्गगत आधार पर वर्गीकरण

वर्ग समूह	छात्रों के सं. एवं प्रति.	छात्राओं के सं. एवं प्रति.	कुल योग सं. एवं प्रति.
1 – 2 वर्ग	20	12	32
3 – 4 वर्ग	24	20	44
5 - 6 वर्ग	6	18	24
योग	50	50	100

सारणी संख्या – 7 से स्पष्ट होता है कि 1 – 2 वर्ग में पढ़ने वाले बच्चों का प्रतिशत 32 है। जबकि 3 – 4 वर्ग में पढ़ने वाले बच्चों का प्रतिशत 44 और 5 – 6 वर्ग में पढ़ने वाले बच्चों का प्रतिशत 24 है। अतः कहा जा सकता है कि 3 – 4 वर्ग में पढ़ने वाले बच्चों का प्रतिशत सबसे अधिक है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्ययन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पारिवारिक वातावरण के साथ-साथ विद्यालय के वातावरण और संगठन का प्रभाव बच्चों के शैक्षणिक विकास पर पड़ता है। विद्यालय में आने के पूर्व ही जो पारिवारिक परिवेश मिलता है, वह बच्चों के शैक्षणिक विकास को काफी हद तक प्रभावित करता है। अतः बच्चे चाहे वे सरकारी विद्यालय में ही पढ़ रहे हों तो उनकें अभिभावक की सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव शैक्षणिक विकास पर पड़ता है। परिवार के वातावरण के प्रभावों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 18 प्रतिशत बच्चे सुखद एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण से विद्यालय आते हैं जबकि 46 प्रतिशत बच्चे सामान्य वातावरण से विद्यालय आते हैं। उत्तम विकास के लिए पारिवारिक वातावरण का महत्त्व सर्वाधिक है। जो बच्चे सौहार्दपूर्ण वातावरण से विद्यालय आते है उनका शैक्षणिक विकास उत्तम होता है। वे विद्यालयों के क्रियाकलापों में दिलचस्पी लेते हैं। परिवार के स्वरूप के संबंध में यह कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत 66 प्रतिशत बच्चे नाभिक परिवार के हैं। अतः उनमें शैक्षणिक विकास सयुक्त परिवार की अपेक्षा अधिक पाया गया। बच्चों के शैक्षणिक विकास पर उनके अभिभावकों के शैक्षणिक स्तर का भी प्रभाव पड़ता है। बच्चों के अभिभावकों में 34 प्रतिशत अभिभावक स्नातक स्तर तक शिक्षित है। अतः स्वभाविक है कि वे बच्चों के शैक्षणिक विकास पर अधिक ध्यान देते हैं। अभिभावक की आर्थिक स्थिति का प्रभाव भी बच्चों के शैक्षणिक विकास पर पड़ता है। बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए अभिभावक तो चाहते ही है कि बच्चोंकी शिक्षा अच्छे स्कूलों में हो परन्तु आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण मजबूरी में अभिभावक सरकारी विद्यालय में शिक्षा दिलवाते हैं। सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत बच्चों के अभिभावकों में सबसे अधिक प्रतिशत 3001 – 4000 रुपये मासिक आय वाले है जिनका प्रतिशत 52 है। अभिभावकों के व्यवसाय का प्रभाव भी बच्चों के शैक्षणिक विकास पर पड़ता है। सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत 76 प्रतिशत बच्चों के अभिभावक नौकरी पेशा वाले हैं। अतः अन्य पेशा समूह से इन बच्चों का शैक्षणिक विकास अधिक पाया गया।

अतः कहा जा सकता है कि बच्चों के शैक्षणिक विकास पर अभिभावक के सामाजिक – आर्थिक स्थिति का बहुत प्रभाव पड़ता है। अतः उनके आर्थिक विकास के लिए स्वयं पहल करना होगा ताकि बच्चों का उचित शैक्षणिक विकास हो सके।

References

1. Asuwell. Theory and problems of child development, New York, 1950.
2. Bossard JHS. The Sociology of child development, Harper, New York, 1954.
3. Bowlby J. Child care and growth of love policon, London, 1953.
4. Block V. Conflicts of Adolescents eith their mothers, Journal of Abnormal and Social Psychology, 32.
5. Davis Kengslty. The Sociology of parent-youth conflict, American sociological review, 1950, 5.
6. Erikson. Childhood and society, New York, 1950.
7. Gottlicb D. Adolescent behaviour in urban areas, the free press of Glencoe, Mc Milan Ltd., London, 1963.
8. Mcclaggage. Drinking patter of High school and youth, social problem, 1958, 5.
9. Mayer S. Developing personality in a child at school, New York, 1947.